पिरामिड के रहस्य खोलता रोबोट

वैज्ञानिकों ने मिस्र के पिरामिड के अंदर एक कैमरायुक्त रोबोट भेजा है और इस रोबोट ने पहले कुछ चित्र भी बाहर भेज दिए हैं। इन चित्रों को देखकर पिरामिड की कई गुत्थियां सुलझने की उम्मीद है। जो चित्र रोबोट ने भेजे हैं वे गिज़ा के महान पिरामिड के अंदर बने एक छोटे प्रकोष्ठ की दीवारों पर बने चिन्हों के हैं। 4500 वर्षों में पहली बार हम इन्हें 'देख' पाए हैं। इसके अलावा पिरामिड के अंदर उपयोग की गई धातु के बारे में भी कुछ सुराग मिले हैं।

ऐसा माना जाता है कि यह पिरामिड फरोआ खुफ़ु ने स्वयं के मकबरे के रूप में बनवाया था और इसे दुनिया के सात आश्चर्यों में शुमार किया जाता है। पिरामिड में तीन प्रमुख प्रकोष्ठ हैंः रानी प्रकोष्ठ, महा-गलियारा, और सम्राट प्रकोष्ठ। सम्राट प्रकोष्ठ में हवा के आवागमन के लिए दो रास्ते हैं जो इसे बाहरी दुनिया से जोड़ते हैं। रानी प्रकोष्ठ से भी दो छोटी-छोटी सुरंगें निकलती हैं मगर वे बाहर नहीं खुलतीं, एक पत्थर के दरवाज़े पर बंद हो जाती हैं।

रोबोट की मदद से इन सुरंगों की खोजबीन करने के कई प्रयास हो चुके हैं। 1993 में एक रोबोट पिरामिड की दक्षिणी दीवार से 63 मीटर अंदर तक गया था। इस रोबोट ने पता लगाया था कि वहां पत्थर का एक दरवाज़ा नुमा है जिसे धातु की कीलों से जोड़ा गया है। पिरामिड में कहीं और धातु का उपयोग नहीं किया गया है। उस समय यह सोचा गया था कि ये कीलें दरवाज़े के हत्थे का काम करती होंगी, या चाबियां होंगी या शायद एलियन्स द्वारा निर्मित पॉवर सप्लाई का हिस्सा रही होंगी।

फिर 2002 में एक और रोबोट पत्थर में सुराख करके अंदर घुसा था। इसने सिर्फ इतना ही बताया था कि अंदर एक प्रकोष्ठ है जो एक बड़े पत्थर की मदद से बंद किया गया है। और अब यू.के. के लीड्स विश्वविद्यालय के रॉब रिचर्डसन और उनके साथियों ने एक रोबोट भेजा है। इस रोबोट को द्येदी नाम दिया गया है। द्येदी उस जादूगर का नाम है जिससे खुफ़ु ने पिरामिड के बारे में सलाह की थी। इस रोबोट के साथ एक कैमरा लगा है जो कोने-कोने के चित्र ले सकता है। इस कैमरे ने जो चित्र भेजे हैं उनसे पता चलता है कि प्रकोष्ठ के पत्थरों पर लाल रंग से कीलाक्षरी लिपि में कुछ लिखा हुआ है। इसके अलावा फर्श पर कुछ निशान बने हैं, जिनके बारे में माना जा रहा है कि वे पिरामिड बनाने वाले मिस्त्रियों द्वारा बनाए गए पहचान चिन्ह हैं। कहते हैं कि मिस्र में मिस्त्रियों द्वारा ऐसे निशान बनाने की परंपरा थी। वैसे भी लाल रंग से लिखी गई इबारतें और संख्याएं गिज़ा के आसपास बहुतायत में मिलती हैं। वैज्ञानिक कोशिश कर रहे हैं कि इस इबारत को पढ़ पाएं। तभी पता चलेगा कि क्या इनका कोई धार्मिक महत्त्व है? जहां तक धातु का सवाल है, कुछ वैज्ञानिकों का मत है कि ये दरवाज़े के हत्थे के प्रतीक हैं। अभी द्येदी प्रोजेक्ट पूरा नहीं हुआ है। तो और सूचनाएं मिलने की उम्मीद की जानी चाहिए। फिर उन सूचनाओं की व्याख्या करके किसी नतीजे पर पहुंचने में भी समय लगेगा। ***(स्रोत फीचर्स)***